श्री श्री १००८ श्री स्वामी आत्मविवेकानंद जी महाराज परमहंस

बाद में श्रीस्वामी स्वरूपानंदजी महाराज परमहंस ने अपनी आध्यात्मिक-ज्योति की मशाल, अपने सबसे सुयोग्य शिष्य स्वामी आत्मविवेकानंदजी महाराज परमहंस के हाथों में दे दी। कालांतर में यह आध्यात्मिक मशाल, गुरु-शिष्य परंपरा में क्रमशः परम आदरणीय भक्त-कल्पतरु, शरणागत-वत्सल, श्री श्री १००८ श्री स्वामी हरसेवानंदजी महाराज परमहंस एवं उनके प्रशंसनीय शिष्य स्वामी हरशंकरानंदजी महाराज परमहंस के रूप में प्रकाशित हुई।

Swāmī Śrī Ātmavivekānanda Jī Mahārāj Paramahansa

Śrī Swarūpānanda Jī Mahārāj Paramhansa later on handed over this torch of divine illumination to his worthy disciple Swāmī Ātmavivekānanda Jī Mahārāj Paramahansa. The spiritual torch of this Saint reincarnated itself in the being of the most venerable Swāmī Harasewānanda Jī Mahārāj Paramahansa and his commendable disciple Swāmī Haraśankarānanda Jī Mahārāj Paramahansa.